## वृद्धावस्था बनाम वृहद आस्था

1– युवाओं को ऊर्जा का पयार्य तो कहा जा सकता है पर उनके पास अनुभव का धन व बल कहॉ। जीवन की सच्चाइयों का ज्ञान कहॉ। वृद्ध अवस्था माना वरद अवस्था, वृहद आस्था, एक सम्पन्न व सम्पूर्ण जीवन व निश्चिंत जीवन। आत्मा कभी न बूढ़ी होती है न जवान होती है बूढ़ा तो उसका शरीर रूपी वस्त्र होता है वस्त्र पुराना होने से व्यक्ति थोड़े ही पुराना होता है, बस पुराने कपड़े को संभाल कर नेम करने की जरूरत होती है। अगर दिल में जीने का उत्साह है, कुछ देने की प्रबल प्रेरणा है, अनुभव रूपी जागीर को बांटने की उत्कंठा है,तो वह कभी भी बूढ़ा नहीं हो सकता न ही उसे बूढ़ा कहा जा सकता है बल्कि उसे तो बढ़ा हुआ कहेंगे।

2– आज तक सभी से सुनते आये कि ज्ञान–ध्यान 60 वर्ष के बाद सुनना चाहिए, (हालांकि आज यह सबकी आवश्यकता हो गई है) तो कुछ तो होगा इस उम्र में। जीवन के चौथे पड़ाव में कुछ खास व अद्भुत होने के कारण ही लोगों ने इसका चयन किया होगा। हम तो समझते है एक तो पारिवारिक कर्तव्य को सम्पन्न कर निश्चिन्त जीवन, जीवन की सच्चाइयों से पूर्णयता अवगत होना,कोई भी बात के सम्पूर्ण ज्ञान होने पर उस कार्य को ठीक से करने पर सफलता 100ः निश्चित होती है अनुभवी कभी धोखा नहीं खा सकता।

दूसरा कारण अनुभव करने के बाद अब चाहे कोई भी हो, व्यक्ति या वैभव, पदार्थ या देह सबका रस लेने के बाद आसक्ति खत्म हो जाती है आकर्षण खत्म हो जाता है फिर दुनिया से विकर्शण हो जाता है जिसके कारण फिर भगवान में मन लगाना सहज हो जाता है।

तीसरा कारण यह भी है कि कर्मेन्द्रियों में चंचलता नहीं, उतावले पन का रोग नहीं प्रतिस्पर्धक वृत्ति नहीं, ईर्ष्या द्वेष की बीमारी नहीं, बदले की भावना नहीं, उत्तेजना का कहर नहीं, ऐसी अवस्था में भगवान की याद सहज प्राप्ति करायेगी।

3– कभी भी बड़े व्यक्ति को छोटे बच्चे से आर्शीवाद लेने के लिए नहीं कहा जाता, जबकि छोटे बच्चे को महात्मा कहा जाता है और वह पवित्र भी होता है, सम्पूर्ण उर्जावान होता है आखिर क्या कारण है जो लोग बुजुर्गो से ही आर्शीवाद लेने के लिए कहते है कारण साफ है बच्चे में निर्मलता का बीज तो है, पर

परोपकार की धरनी नहीं है, सत्यता की धूप तो है, पर स्नेह का पानी नहीं है, करूणा का सहयोग नहीं है, कुटिलता व जटिलता रूपी कॉटे नहीं परउपकार व शुभ भावना की खाद भी तो नहीं है, अहंकार का कीड़ा नहीं है,पर दायित्व का बोध भी तो नहीं, सरलता की ऊर्जा तो है पर गम्भीरता की उश्मा नहीं, निश्चलता का सूर्य तो है पर स्थात्यिव का सागर नहीं, करिश्माई व्यक्तित्व तो है पर कुशलता का आधार नहीं। शायद यही कारण है कि बुजुर्गो से ही लोग आशीर्वाद लेने के इच्छुक रहते हैं, व आशीर्वाद की अपेक्षा करते हैं। इतना सम्पन्न जीवन जिसके पास हो वह एक गरिमाई अतुलनीय व्यक्तित्व है उसका सही और सबके लिए सदपयोग करके जो भी सम्पर्क में आये उसे लाभान्वित अवश्य करना चाहिए, जिससे हरेक से दुआयें प्राप्त कर अपने पुण्य का खाता और भी बढ़ा सकते हैं। ऐसे अद्भुत प्राप्तियों से भरपूर जीवन वृद्धावस्था में ही सम्भव हैं।

4– जब सरकार बेकार समझ रिटायर कर देती हैं तब भगवान सृष्टि परिवर्तन का आधार बनाता है। प्रजापिता ब्रह्मा के तन को जब शिव परमात्मा ने अपना आधार बनाया तब उनकी उम्र 60 वर्ष थी, सम्पूर्ण तमोप्रधान स्थिति से सम्पूर्ण सतोप्रधान स्थिति तक का पुरूषार्थ प्रजापिता ब्रह्मा ने 60 वर्ष की उम्र के बाद ही किया। और उन्होंने सम्पूर्ण विकर्माजीत व विकारजीत की स्थिति को भी प्राप्त कर लिया। जब प्रजापिता ब्रह्मा कर सकता है तो अन्य भी कर सकते है जब कोई एक कर सकता है तो दूसरा भी कर सकता है। आत्मबल और परमात्मबल अगर साथ हो तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं, और परमात्मा जो कि सर्वशक्तिमान है वह हमारा प्यारा पिता है वह ज्ञान के साथ प्रेम व दया व करूणा का भी सागर है। हम क्यों नहीं कर सकते, जबकि भगवान हमारा साथी है तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जायेंगे, आवश्यकता सिर्फ हमें कदम बढ़ाने की है। अभी तलक तो हम वही करते आये जो मन ने कहा अब जरा वो कर लें जो हमें भगवान कह रहा है, जीवन के इस अन्तिम सफर में उसको अपना साथी बनाकर एक बार उसकी मत पर चल कर देख लिया जाये।

हर मंजिल दस्तक देती है, पुरूषार्थ की उत्तम रेखा पर।

तकदीर स्वतः ही बदलती है, सतकर्मो की अभिलेखा पर।।

ओम शान्ति ब्र0 कु0 सुमन जानकीपुरम्